

थरूर विवाद पीछा नहीं छोड़ रहा, कांग्रेस का केरल में

विवाद की जड़, पीढ़ी परिवर्तन भी लगती है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 24 मई। भारत-पाक सीमा पर तनाव फिलहाल के लिए स्थिर नज़र आ रहा है, लेकिन कांग्रेस पार्टी के शशि थरूर द्वारा मोदी सरकार के एक आउटरीच मिशन के निमंत्रण को तुरंत स्वीकार किए जाने को लेकर कांग्रेस पार्टी में एक राजनीतिक तूफान उठ खड़ा हुआ है। थरूर के इस कदम से पार्टी में उनके भविष्य को लेकर अटकलें शुरू हो गई हैं, खासकर केरल और दिल्ली में, जहाँ यह चर्चा ज़ोरों पर है कि वे केन्द्र की भाजपा सरकार के साथ किसी संभावित समीकरण की दिशा में बढ़ रहे हैं।
तथापि, थरूर के समर्थक उनके बचाव में उतर आए हैं। केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष के. सुधाकरन ने सार्वजनिक रूप से थरूर का समर्थन किया और थरूर का नाम पार्टी प्रतिनिधियों की आधिकारिक सूची से हटाने को लेकर कांग्रेस नेतृत्व की आलोचना की। सुधाकरन ने कहा, “थरूर ने हमेशा राष्ट्रीय हित में काम किया है और उन्हें दरकिनार करना अन्यायपूर्ण है।” उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी को ऐसे नेताओं को अलग-थलग नहीं करना चाहिए, जिनके पास जन समर्थन और अंतरराष्ट्रीय पहचान है।
इस मामले ने कांग्रेस की केरल

- पुरानी पीढ़ी के नेता थरूर के वक्तव्यों को, पार्टी के परम्परागत, “कमांड स्ट्रक्चर” को चुनौती मानते हैं और पार्टी की एकता को चुनौती करार देते हैं।
- पर, नई पीढ़ी के नेता थरूर के आकर्षण को एक “एसैट” (ताकत) मानते हैं।
- केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष के. सुधाकरण का मत है, “कांग्रेस के हाईकमान ने गलती की, थरूर का नाम अपनी लिस्ट में नहीं दिया, जो उन्होंने सरकार को सौंपी थी, पार्टी के प्रतिनिधि के चयन के लिए। थरूर ने सदा देश के हित को ध्यान में रखकर काम किया है। अतः उनका नाम नहीं देना, थरूर के साथ अन्याय था।
- दूसरी ओर केरल कांग्रेस के अधिकांश परम्परावादी नेता मानते हैं कि थरूर का बार-बार मोदी व उनकी नीतियों की बढ़ाई करना, पार्टी के भाजपा के विरुद्ध एक “युनाइटेड फ्रंट” पेश करने के प्लान को कमज़ोर करता है।
- एक वरिष्ठ नेता, अपना नाम न देने की शर्त पर बोले कि बिहार के चुनाव की दृष्टि से बनाई गई पार्टी की रणनीति का आधार, मोदी की छवि को चुनौती देना है। विशेषकर ऑपरेशन सिंदूर के बाद जब मोदी ऑपरेशन सिंदूर को चुनाव का मुख्य मुद्दा बनाना चाहते हैं।
- मोदी बार-बार राहुल गांधी का मखौल बनाते हैं. केन्द्रीय सरकार के ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल उठाने की वजह से। इस मौके पर थरूर का सरकार की नीति से जुड़ना, भाजपा के हाथों में खेलना है।

इकाई के भीतर बढ़ती फूट को उजागर किया है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता वी. डी. सतीसन ने डिप्पणी करते हुए कहा, “यह मामला पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा सुलझाया जाना चाहिए। आंतरिक

मतभेदों को सही मंचों पर हल करना आवश्यक है।”
पार्टी के भीतर के सूत्रों का कहना है कि केरल में कांग्रेस के एक बड़े वर्ग को थरूर द्वारा बार-बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार की नीतियों की

सार्वजनिक सराहना से नाराजगी है। उनका मानना ​​है कि इस तरह की गतिविधियाँ भाजपा के खिलाफ कांग्रेस की एकजुट रणनीति को कमज़ोर करती हैं। एक वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने, नाम न (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दोनों देशों ने ऑपरेशन पहलगाम के मुख्य “नायकों” को सम्मानित किया

पाकिस्तान ने जनरल असीम मुनीर को “फील्ड मार्शल” बनाया। भारत ने आईबी चीफ को एक साल का “एक्सटेंशन” दिया

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -
नई दिल्ली, 24 मई। युद्ध मानवता के लिए सदैव नुकसानदायक ही रहा है। भारत और पाकिस्तान - दोनों ही पहलगाम हमले के बाद चार दिन चले संघर्ष में अपनी-अपनी जीत के दावे कर रहे हैं।
इस बीच, आईबी चीफ तपन डेका को मोदी सरकार ने 1 वर्ष का सेवा-विस्तार (एक्स्टेंशन) दे दिया है, जबकि कुछ लोग उन पर पहलगाम-नरसंहार में खुफिया तंत्र की असफलता का दोषारोपण कर रहे हैं। उन्हें एक्स्टेंशन का यह पुरस्कार दूसरी बार दिया गया है और इस प्रकार वे इंटेलिजेंस ब्यूरो (आई बी) के सबसे ज्यादा समय तक रहने वाले निदेशक बन गये हैं।
उधर, पाकिस्तान ने ऑपरेशन

सिंदूर के बाद हुई पाकिस्तान की शर्मनाक स्थिति के बाद, जनरल आसिम मुनीर को पदोन्नत कर दिया है। जिन्हें बर्खास्त किया जाना चाहिए था, वे पदोन्नत कर दिये गये हैं।
डेका के एक्स्टेंशन के लिए सिफारिश करने वाले लोग बार-बार यह कहते रहे हैं कि तपन कुमार डेका क्रॉस-बॉर्डर टैरिज्म के विशेषज्ञ हैं, उन्हें कश्मीर का लम्बा अनुभव है तथा पहलगाम आतंकी हमले के बाद की परिस्थिति में उनकी सेवाएं बहुत ज्यादा जरूरी हैं। लेकिन डेका के आलोचकों का कहना है कि आतंकवाद के एक ऐसे विशेषज्ञ, जिन्हें कश्मीर के आतंकी स्थलों की गहन जानकारी एवं समझ है, के होते हुए पहलगाम में इतना घातक नरसंहार कैसे हो गया?

ये लोग यह आरोप भी लगा रहे हैं कि डेका उन 26 निर्दोष लोगों की मौतों

के लिए सीधे जवाबदेह हैं, जिन्हें सीमा-पार के आतंकियों ने नृशंसतापूर्वक गोलीयों से उड़ा दिया। ये हत्यारे जबरदस्त संरक्षित नियंत्रण रेखा को पार कर पाकिस्तान से भारत में आखिर घुस कैसे आये, यही नहीं, उन्होंने भारत-भूमि पर करीब 200 किलोमीटर की दूरी भी तय करली, और तपन डेका नामक इस तथाकथित सुपर स्पाई की सीधी देख-रेख में काम कर रहे दुर्जेय बल को उनके बारे में पता नहीं चला?

पहलगाम दुखान्तिका के एक महीने बाद भी, भारतीय जमीन पर मौजूद वे पाकिस्तानी आतंकी दूढ़े नहीं जा सके हैं। क्या यह एक बहुत ही बड़े स्तर एवं आकार की लापरवाही, अक्षमता नहीं है, जिसकी कीमत 26 निर्दोष भारतीयों ने अपनी जान देकर चुकाई है?

- हाईकोर्ट में पेश याचिका के अनुसार नगर पालिका की सीमा में शामिल ग्राम को सीमा से बाहर करने की शक्ति नगर पालिका अधिनियम में नहीं है।

शासन सचिव, डीएलबी निदेशक, पंचायती राज सचिव, कोटपूतली-बहेरोड कलेक्टर और नगर पालिका बानसूर सहित, अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस अनिल उपमन की एकलपीठ ने ये आदेश स्थानीय निवासी बंसी राम व अन्य की निंदोष भारतीयों ने अपनी जान देकर चुकाई है?

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘विकसित राजस्थान 2047 का विज़न डॉक्युमेंट तैयार हो रहा है’

मुख्यमंत्री भजनलाल ने नीति आयोग में जल व ऊर्जा सुरक्षा के लिए अधिक सहयोग का अनुरोध किया

नई दिल्ली/जयपुर, 24 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शनिवार को नई दिल्ली के भारतमंडपम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में नीति आयोग की शासी परिषद की दसवीं बैठक में शामिल हुए। मुख्यमंत्री शर्मा ने बैठक में विकसित राजस्थान के संकल्प को पूरा करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की विस्तार से चर्चा की और प्रदेश में जल और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए केन्द्र सरकार से अधिक सहयोग का भी अनुरोध किया।
बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार विकसित राजस्थान का लक्ष्य हासिल करने के लिए हर पहलू पर तेजी से काम कर रही है। इसी दिशा में आर्थिक समृद्धि, सतत विकास और समावेशी प्रगति को केन्द्र में रखते हुए नीति आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप ‘विकसित राजस्थान 2047’

- मुख्यमंत्री ने ऊर्जा सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए बैट्री स्टोरेज के लिए 5000 मेगावॉट आवर का अतिरिक्त लक्ष्य आवंटित करने तथा 40 गीगावॉट अतिरिक्त ऊर्जा के इवेक्युएशन हेतु प्लान तत्काल बनाने का अनुरोध किया।
- उन्होंने कहा कि पौंग बांध में पूर्ण क्षमता तक जल भराव के लिए शीघ्र निर्णय लिया जाये तथा 51.5 किलोमीटर लम्बी फिरोजपुर फीडर की लाइनिंग के लिए स्वीकृति प्रदान की जाये।

विज़न डॉक्यूमेंट तैयार किया जा रहा है। उन्होंने रामजल सेतु लिंक परियोजना तथा यमुना जल समझौते को मूर्त रूप देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ये जल परियोजनाएं विकासित राजस्थान के संकल्प को साकार करने में अहम भूमिका निभाएंगी।
मुख्यमंत्री ने बैठक में केन्द्र सरकार

से अनुरोध करते हुए कहा कि पौंग बांध की कुल भराव क्षमता 1400 फीट ऊंचाई तक अनुमत है, लेकिन पर्याप्त वर्षा के दौरान भी इस बांध में अधिकतम सीमा तक जल भराव नहीं किया जा रहा है। पौंग बांध को पूर्ण क्षमता तक जल भराव करने के संबंध में शीघ्र निर्णय लिया जाए, जिससे भागीदार राज्यों को (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नाबालिग से दुष्कर्म : दो अभियुक्तों को 20 साल की सजा

जयपुर, 24 मई। ज़िले की पाँक्सो मामलों की विशेष अदालत ने नाबालिग किशोरी से तीन साल के अन्दर दुष्कर्म करने वाले दो अभियुक्त दीपक और जगदीश को बीस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही, अदालत ने दोनों अभियुक्तों पर कुल पांच लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी केसी अटवासिया ने अपने आदेश में कहा कि एक अभियुक्त ने पीड़िता से दुष्कर्म कर उसे गर्भवती किया और दूसरा उससे तीन साल पहले दुष्कर्म कर चुका था। यौन अपराध का बाल मन पर गहरा असर होता है। ऐसे

- पाँक्सो मामलों की विशेष अदालत ने सांभर लेक के मामले में निर्णय सुनाया।

में अभियुक्तों के प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक विजया पारीक ने अदालत को बताया कि घटना को लेकर पीड़िता के पिता ने 12 फरवरी, 2022 को सांभर लेक थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसके 17.5 साल की बेटी पिछले कुछ माह से गुमसुम रहने लगी और उसका शरीर भी भारी लग रहा था। इसके साथ ही वह बार-बार उल्टियां भी कर रही थी। ऐसे में उसने अपनी भाभी के जरिए पुछवाया तो पीड़िता ने बताया कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है। पीड़िता ने कहा कि करीब तीन साल पहले जब वह पशु चरा रही थी तो जगदीश ने उसके साथ दुष्कर्म (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हार्वर्ड युनिवर्सिटी को अस्थायी राहत मिली

अन्य देशों के विद्यार्थियों को एडमिशन न देने के ट्रम्प के आदेश पर अस्थायी प्रतिबंध लगा

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 24 मई। अंतरराष्ट्रीय छात्रों को शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में दाखिला देने पर अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा लगाए गए प्रतिबंध से हार्वर्ड विश्वविद्यालय को अस्थायी राहत मिल गई है। यह खबर वर्तमान वर्ष के लगभग 7,000 छात्रों के लिए बड़ी राहत लेकर आई है, जो हार्वर्ड के विभिन्न कोर्स में पढ़ रहे हैं। इनमें लगभग 700 छात्र भारतीय हैं, जो अपने छात्र वीजा खोने और देश लौटने की आशंका से जूझ रहे थे।

हालांकि विश्वविद्यालय और इसके अध्यक्ष के लिए यह एक तरह की जीत है, लेकिन युनिवर्सिटी और विदेशी छात्रों के लिए भविष्य की अनिश्चितता बरकरार है। संकेत मिल रहे हैं कि नए शैक्षणिक सत्र के लिए दाखिलों की संख्या में भारी गिरावट आई है।

चिंता यह भी है कि फिलहाल यह प्रयास विफल होने के बावजूद, ट्रंप प्रशासन अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए फिर से कोई नया आदेश ला सकता है। छात्र समुदाय का कहना है कि इस तरह की कार्रवाई के बाद हार्वर्ड या अन्य अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जारी रखना कठिन हो सकता है।

- अब, युनिवर्सिटी व अन्य देशों के लगभग सात हजार विद्यार्थी, जो हार्वर्ड में पढ़ रहे थे या रिसर्च कर रहे थे, को तुरन्त वापस नहीं जाना पड़ेगा। इनमें 700 विद्यार्थी भारतीय हैं।

- हार्वर्ड में कई दशकों से कैसर पर रिसर्च चल रही है तथा मरीजों के सूत्र व खून के “सैंपल” प्रिज़र्व करके रखे गये हैं। ये सैंपल इस बीमारी पर रिसर्च करने के लिये अमूल्य निधि हैं। पर, इनको अशुद्ध न होने के लिये करोड़ों रुपए खर्च होते हैं।

- पर, अब हार्वर्ड की “फण्डिंग” कम कर देने से इन “सैंपल” का प्रिज़र्वेशन खतरे में पड़ जायेगा, जो मानव जाति के लिये असहनीय नुकसान होगा।

- दशकों पुराने इन सैंपल्स की कमी अब बहुत खलेगी, क्योंकि आधुनिक साधनों, जैसे ए.आई. से अब मौका मिला है मानव जाति के लिए अबूझ पहेली बनी, बीमारियों पर और गहराई से रिसर्च करने का।

कई छात्र हैरान और परेशान हैं कि हार्वर्ड में दाखिला लेना, जो जीवन भर का सपना होता है, शायद अब पूरा न हो पाए।

दाखिलों के अलावा, ट्रंप प्रशासन द्वारा शीर्ष अमेरिकी विश्वविद्यालयों के विरुद्ध उठाए गए अन्य कदम विज्ञान

और वैज्ञानिक शोध परियोजनाओं के लिए बड़ा झटका साबित हो सकते हैं। इससे कुछ बुनियादी अनुसंधानों और विज्ञान के भविष्य को नुकसान होगा।

पूरी मानवता के लिए बेहद अहम एक अध्ययन दांव पर है। हार्वर्ड (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सतपाल मलिक 11 मई से अस्पताल में हैं तथा आजकल डायलिसिस पर चल रहे हैं

- राहुल गांधी ने कुछ देर सतपाल मलिक से बात की और कहा, सच के लिए लड़ाई में वे सतपाल मलिक के साथ हैं।
- 22 मई को सीबीआई ने तीन साल की जाँच-पड़ताल के बाद सतपाल मलिक के खिलाफ चार्जशीट पेश की न्यायालय में 2200 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले किरू हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट में सिविल काम का ठेका देने के मामले में।
- राहुल गांधी ने पुंछ में पाकिस्तान के आतंकी हमले में मरे तेरह जनों के परिवार से भी मुलाकात की। कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष ने कहा, वे राहुल गांधी को पहले ही बुलाना चाहते थे, पर, उन्हें आने की इजाज़त नहीं मिल पाई थी।

में जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक जी से मिला तथा उनकी स्वास्थ्य संबंधी जानकारी ली। आशा करता हूँ कि वे शीघ्र ही ठीक हो जायेंगे। गांधी ने ‘एक्स’ पर पोस्ट किया, “आज मैं राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल

हूँ।”

सूत्रों ने कहा, “मलिक आज चार दिन बाद होश में आये। वे आई सी यू में भर्ती हैं तथा राहुल ने कुछ मिनट उनसे बातचीत की।”

22 मई को सी बी आई ने मलिक तथा पांच अन्य के खिलाफ किरू हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट के लिए दिये गये 2200 करोड़ रु. के सिविल वर्क्स के ठेके में कथित अनियमितताओं को लेकर चार्जशीट पेश की। तीन साल तक की जांच-पड़ताल के बाद, एक विशेष अदालत में मलिक तथा अन्य आरोपियों के खिलाफ यह चार्जशीट पेश की गई है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी आज सुबह जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में गये तथा वहां इस महीने के शुरू में भारत-पाक संघर्ष के दौरान पाकिस्तानी गोलाबारी से प्रभावित हुए परिवारों से मिले।

विदित ही है कि जम्मू-कश्मीर के पर्यटन केन्द्र पहलगाम के पास बैसारण में इस्लामाबाद समर्थित आतंकियों द्वारा पर्यटकों पर किये गये एक घातक हमले के बाद, भारत और पाकिस्तान बड़े और पूर्ण युद्ध के कगार पर पहुंच गये थे। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सायबर ठगी में बैंक खाता नहीं विवादित राशि फ्रीज़ करें

जयपुर, 24 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि साइबर ठगी के मामले में उपभोक्ता के पूरे बैंक खाते को फ्रीज़ करने के बजाए खाते में आई विवादित राशि को ही फ्रीज़ किया जाना चाहिए। इसके साथ, ही अदालत ने आईसीआईसीआई बैंक को निर्देश दिए

- हाईकोर्ट ने आई.सी.आई.सी.अ.आई. बैंक को याचिकाकर्ता के बैंक खाते को डीफ्रीज़ करने के निर्देश दिये।

है कि वह याचिकाकर्ता के बैंक खाते को डीफ्रीज़ करे और सिर्फ खाते में आए विवादित 55,141 रुपए की फ्रीज़ करे। अदालत ने कहा कि याचिकाकर्ता जांच में बैंक और अनुसंधान अधिकारी का सहयोग करें। वहीं, जांच लंबित रहने के दौरान खाते को बंद भी नहीं किया जाए। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

संक्षिप्त

24 छात्राए गार्गी पुरस्कार में चयनित

अजमेर, (कासं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ठ परिणाम देने पर पीएमश्री राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजाकोठी गुलाबबाड़ी की 24 छात्राए गार्गी पुरस्कार में चयनित हुई है। प्रधानाचार्य इन्द्रा सोनगरा ने बताया कि कला संकाय में 8०.95प्रतिशत परीक्षा परिणाम रहा एवं कला संकाय में छात्रा भूमिका ने सर्वश्रेष्ठ 89.60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। विज्ञान संकाय में 92.59 प्रतिशत प्रतिशत परिणाम रहा एवं विज्ञान संकाय में जीव विज्ञान वर्ग की छात्रा निकिता ने सर्वश्रेष्ठ 86प्रतिशत और गणित वर्ग में सुरभि गहलोत ने 85प्रतिशत अंक प्राप्त किए। वाणिज्य संकाय में 1०0प्रतिशत परिणाम रहा एवं वाणिज्य वर्ग संकाय की छात्रा नेहा ने 85.80प्रतिशत अंक प्राप्त किए। साथ ही साथ विद्यार्थ्य की 24 छात्रों ने 75प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया।

ओपन रन का आयोजन

अजमेर, (कासं)। विश्व पर्यावरण दिवस के अंतर्गत एक पखवाड़े तक आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की कड़ी में 'प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करें' संबंधित विषय पर आधारित ओपन रन (दौड़) का आयोजन मंडल कार्यालय के समीप स्थित जीएलओ ग्राउंड पर किया गया। इसमें मंडल रेल प्रबंधक राजू भूतड़ा सहित रेल कर्मचारिओं व अधिकारियों, रेलवे हॉस्पिटल के डॉक्टर व स्टाफ तथा आर पी एफ जवानों ने भाग लिया। मंडल के अन्य प्रमुख स्टेशनों पर भी इस प्रकार की आयोजन किया गया जिसमें रेल अधिकारियों में कर्मचारियों ने भाग लिया। ओपन रन के अंतर्गत प्लास्टिक के कचरे को कम करने, रिसाइकिल करने के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने हेतु नारों और बैनर के माध्यम सेआमजन को जागरूक किया गया। इस अवसर पर दौड़ में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को पर्यावरण संरक्षण व प्लास्टिक बैग का उपयोग नहीं करने संबंधित स्लोगन लिखे बैग भी वितरित किए गए।

रघुकुल पब्लिक स्कूल का उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम

मदनगंज-किशनगढ़,(निस)। शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित कक्षा 12वीं कला व वाणिज्य संकाय में रघुकुल पब्लिक स्कूल का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ठ रहा। निदेशक प्रदीप अग्रवाल ने बताया की कला वर्ग में राधिका शर्मा ने 92 प्रतिशत, प्रियंशी जोरम 91.6, मुस्कान वैष्णव ने 91 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। वाणिज्य वर्ग में आठ विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये। संस्था प्रधान कांता यादव ने होहार विद्यार्थियों का अभिनन्दन किया। इस दौरान चेष्टा, हर्षित, चंचल, कनिष्ठा, साक्षी, लक्ष्मी, ओमप्रकाश, पवन के अलावा सांवरमल कुमावत, अनीता छिपा, इंदु आदि मौजूद रहे।

प्रताप सिंह बारहठ की जयन्ती मनाई

भीलवाड़ा। अमर शहीद कु प्रताप सिंह बारहठ सेवा संस्थान शाहपुरा के तत्वाधान में कु प्रताप सिंह बारहठ की 1३3 वी जयन्ती समारोह इस बार कोटा मे आज 24 मई को समारोह धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है। त्रिवर्ति बारहठ स्मारक पर बारहठ वीरो को माल्यार्पण कर शाहपुरा विचारक लालाराम बेरवा, सभापति रघुनन्द सोनी, पूर्व पालिका अध्यक्ष कन्हैया लाल धाकड़ की मौजूदगी में अमृत कलश यात्रा बस कोटा के लिए रवाना किया। इस दौरान यात्रा संयोजक कन्हैया लाल धाकड़, पारम्पररूप कबरा, राजेश सोलंकी यशपाल पाटनी, सुरेश घुसर, बसंत वेण्णव, कमलेश मुंडेतिया सहित सैकड़ो क्षेत्रवासी यात्रा मे शामिल हुए।

सफाई व्यवस्था को लेकर सांकेतिक धरना

मदनगंज-किशनगढ़,(निस)। कांग्रेस पार्षद दल ने शहरी क्षेत्र में सफाई व्यवस्था ठीक नहीं होने पर सांकेतिक धरना देने की घोषवनी दी है। प्रतिपक्ष नेता हमीदा बानो ने बताया की वार्डों में सफाई व्यवस्था अस्त व्यस्त हो रखी है। वार्ड में दो महिला व एक पुरुष सफाई कर्मचारियों को लगाने से जगह जगह कचरे के ढेर लगे हुए है, नालियों की सफाई नहीं होने के कारण गंदा पानी सड़क पर आ रहा है। कई मर्तबा शिकायत किये जाने के बावजूद व्यवस्था में सुधार नहीं हो पा रहा है। अरब पहले की तरह सभी वार्डों में 7-8 सफाई कर्मचारियों को नहीं लगाया तो 27 मई को सांकेतिक धरना दिया जायेगा।

रेल कर्मियों ने निकाली रैली : जागरूकता का दिया संदेश

अजमेर, (कासं)। मंडल रेल प्रबंधक राजू भूतड़ा ने शनिवार को यहां कहा है कि समूची प्रकृति को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए प्लास्टिक का उपयोग कम से कम और सिर्फ आवश्यकता अनुसार ही करें।

प्लास्टिक के अंधाधुंध प्रयोग से पर्यावरण के संतुलन पर जबरदस्त विपरीत असर पड़ रहा है जो एक चिंता का विषय है।

विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़े के अंतर्गत उत्तर पश्चिम रेलवे के अजमेर

- प्रकृति को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए प्लास्टिक का उपयोग कम से कम और सिर्फ आवश्यकता अनुसार ही करें - भूतड़ा**

मंडल पर आयोजित जागरूकता रैली का शुभारंभ करते हुए मंडल रेल प्रबंधक भूतड़ा ने कहा कि विभागीय स्तर पर भी वर्ष भर इस संबंध में अभियान चलाए जाते हैं।

रेलवे स्टेशनों पर प्लास्टिक

चतुर्थ फेज में बीसलपुर पेयजल की सप्लाई शुरू

मदनगंज-किशनगढ़। जलदाय विभाग द्वारा न्यू हाउसिंग बोर्ड चतुर्थ फेज के क्षेत्रवासियों के लिए बीसलपुर के पेयजल की सप्लाई शुरू चालू कर दी है। वरिष्ठ भाजपा नेता महेंद्र पाटनी ने जलदाय विभाग के अतिरिक्त मुख्य अभियंता रामचंद्र राड से संपर्क कर अवगत कराया की आवासन मंडल द्वारा डिमांड के अनुसार 12.86 करोड़ रुपए जमा कराने के बावजूद न्यू हाउसिंग बोर्ड के वाशिनों को बोरिंग से प्रदत फ्लोराइड युक्त पानी पीने को मजबूर होना पड़ रहा है, जबकि अधिकारियों द्वारा अतिरिक्त एम एल डी पानी मिलने की उपातों ही पेयजल की आपूर्ति की जाने वाला फीरी कथन महज टालमटोल रवैया अपनाया जा रहा है। पाटनी के निरंतर प्रयास के चलते जलदाय विभाग और बैनर के माध्यम सेआमजन को जागरूक किया गया। इस अवसर पर दौड़ में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को पर्यावरण संरक्षण व प्लास्टिक बैग का उपयोग नहीं करने संबंधित स्लोगन लिखे बैग भी वितरित किए गए।

अभिरुचि शिविर का किया अवलोकन

ब्यावर। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के तत्वाधान में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कृष्णा कॉलोनी में ग्रीष्मकालीन कला कोशल एवं अभिरुचि शिविर का आयोजन किया जा रहा है। विद्यालय के संस्था प्रधान मोहन सिंह चौहान ने बताया कि आज मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जवाजा कविता मौर्य ने अभिरुचि एवं कला कोशल शिविर का अवलोकन किया और विभिन्न गतिविधियों को देखा। इस अवसर पर विद्यालय में एक समारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता विमल चौहान सहायक स्टेट कमिश्नर, मुख्य अतिथि कविता मौर्य मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जवाजा, विशिष्ट अतिथि सुरेश चन्द फुलवारी सचिव स्थानीय संघ जवाजा ने की इस अवसर पर कविता मौर्य ने विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए व्यंजनों को चखा, उनके नृत्य को देखा, इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स को देखा, मेहेंदी व ब्यूटिशान प्रतियोगिता को देखा।कविता



विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़े पर जागरूकता रैली निकाली।

सामग्री के प्रतिबंध के साथ-साथ रेल यात्रियों को भी जागरूक किया जाता है।

मंडल कार्यालय स्थित स्टेडियम से प्रारंभ हुई इस रैली में भारी संख्या में रेल कर्मियों तथा रेलवे सुरक्षा बल के पुरुष एवं महिला अधिकारियों एवं जवानों ने दौड़ लगाई।

यह रैली रेल परिसर की अनेक कॉलोनियों एवं शहर के मार्ग से होकर

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत



विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़े पर जागरूकता रैली निकाली।

सामग्री के प्रतिबंध के साथ-साथ रेल यात्रियों को भी जागरूक किया जाता है।

मंडल कार्यालय स्थित स्टेडियम से प्रारंभ हुई इस रैली में भारी संख्या में रेल कर्मियों तथा रेलवे सुरक्षा बल के पुरुष एवं महिला अधिकारियों एवं जवानों ने दौड़ लगाई।

यह रैली रेल परिसर की अनेक कॉलोनियों एवं शहर के मार्ग से होकर

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

कल तिरंगा व सिंदूर यात्रा का आयोजन

आसीन्द, (निसं)। राष्ट्रीय सुरक्षा नागरिक समिति के तत्वाधान में ऑपरेशन सिंदूर की सफलता व भारतीय सेना के सम्मान में जिसके अंतर्गत आसींद विधानसभा क्षेत्र की विशाल तिरंगा रैली का आयोजन आज प्रातः 1० बजे सवाई भोज मंदिर प्रांगण से प्रारंभ होगी।

विधायक जम्बर सिंह साँखला ने बताया कि तिरंगा यात्रा व सिंदूर यात्रा में सभी जाति वर्ग सामाजिक संगठन, पूर्व सैनिक, किसान, भूतपूर्व सैनिक विद्यार्थी, पूर्व एनसीसी कैडेट, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिका स्काउट गाइड, कर्मचारी, सेवानिवृत्त कर्मचारी, महिला वर्ग, एनजीओ, सभी प्रकार के संगठन के सदस्य उपस्थित रहेंगे। सिंदूर यात्रा आसीन्द बस स्टैंड से प्रारंभ होगी जो शिव मंदिर पंचायत समिति आसीन्द समापन होगा।

तिरंगा यात्रा सह संयोजक गोपाल सिंह चुंडावत ने यात्रा की तैयारियों के बारे में बताया। इस मौके पर भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष अनिल सिंह तंबर भाजपा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष फोजमल गुर्जर आसीन्द विधानसभा संयोजक अशोक तलाईचंद ग्रामीण महामंत्री जगदीश चंद्र गर्ग, महावीर साहू, नगर उपाध्यक्ष श्रवण लाल गुर्जर आदि उपस्थित रहे।

शिविर मे 76 रोगी लाभान्वित

बिजयनगर, (निसं)। शनिवार को होटल संचेती पैलेस मिल चौक में श्री वर्धमान सेवा संस्थान एवं कृष्ण गोपाल आयुर्वेदिक धर्माथ औषधालय धर्माथ ट्रस्ट कालेड़ा कृष्ण गोपाल के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को निशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं परामर्श शिविर आयोजित किया गया। वैद्य राजेश कुमार शर्मा ने परामर्श करके उपचार किया तथा उप वेद्य दिनेश कुमार सेन तथा परिचारक रघुवीर वर्मा ने औषधीय तैयार करके निशुल्क वितरित की। इस शिविर में 76 रोगी लाभान्वित हुए। शिविर में रोगियों की शुरार एवं बी पी की जांच भी की गई। शुरार की जांच दिलीप कुमार तलेसरा द्वारा की गई। श्री वर्धमान सेवा संस्थान के पदाधिकारी संरक्षक शेवरचंद जैन, अध्यक्ष अनिल संचेती, मंत्री मुकेश बिलवाड़ीया, कायध्यक्ष नोरमल भंडारी, कोषाध्यक्ष धनलाल बोहरा, संगठन मंत्री दिलीप कुमार तलेसरा, उपाध्यक्ष वृद्धिचंद पीपाड़ा व बीरदी चंद्र पीपाड़ा, उपमंत्री राकेश चोपड़ा, व रूपचंद लुणावत सह कोषाध्यक्ष प्रिंस सुराणा तथा अर्पित लुणावत संजय बाफना व उमराव बिर्णी सहित सदस्यों ने बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हेतु सुझाव के संदेश पट्टिका लेकर दौड़ रहे थे। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाएगा।

प्लास्टिक सामग्री शरीर के लिए घातक-डॉ. सिंह

मंडल रेलवे हॉस्पिटल के अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजीत

गुजरी। लगभग 3 किलोमीटर की इस दौड़ में सभी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान तथा बचाव हे

एसएमएस अस्पताल लापरवाही का मामला उच्च स्तरीय जांच समिति का गठन

गर्भवती को चढ़ाया गया गलत ब्लड ग्रुप, चिकित्सा मंत्री ने बुलाई आपात बैठक

जयपुर। प्रदेश के सबसे बड़े सर्वाई मानसिंह अस्पताल में चिकित्सा लापरवाही का सनसनीखेज मामले में चिकित्सा विभाग में हड़कंप मचा दिया है। एसएमएस की जांच कमेट्री ने अपनी जांच में माना है कि लापरवाही के चलते टोंक निवाई से भर्ती एक गर्भवती महिला को इलाज के दौरान गलत ब्लड ग्रुप चढ़ा दिया गया था, वहीं दूसरी ओर अस्पताल प्रशासन अभी इस पर अड़ा हुआ है कि महिला की स्थिति पहले से ही नाजुक थी, जिसके कारण उसकी मौत हुई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवर ने शनिवार को

एसएमएस मेडिकल कॉलेज में उच्च स्तरीय बैठक बुलाई। बैठक के बाद मंत्री ने पांच सदस्यीय उच्च स्तरीय जांच समिति के गठन की घोषणा की, जो तीन दिन में मामले को विस्तृत रिपोर्ट पेश करेगी। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री खींवर ने कहा है कि इस संवेदनशील मामले में कोई कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। दोषी पाए जाने वाले अधिकारी-कर्मचारियों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि महिला 9 मई से एसएमएस अस्पताल में भर्ती थी। उसकी हालत पहले से ही गंभीर थी।

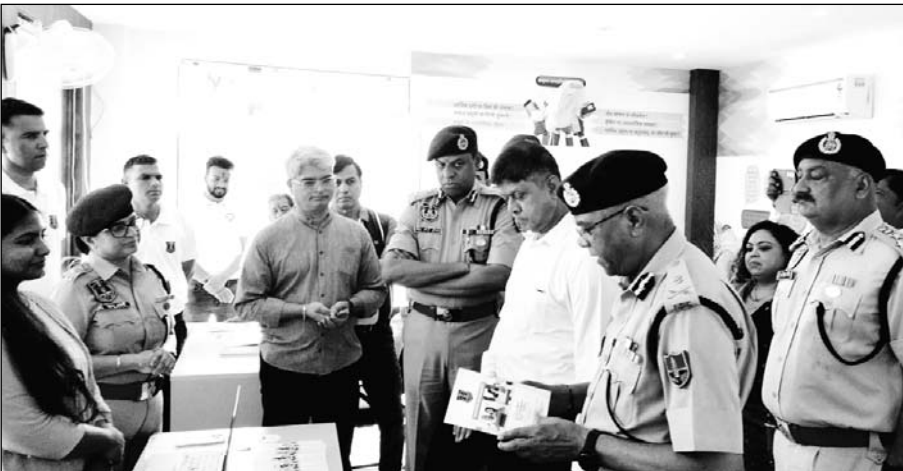
- तीन दिन में सौंपनी होगी रिपोर्ट, दोषियों पर होगी सख्त कार्रवाई
- अस्पताल प्रशासन की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट में हुई पुष्टि

हीमोग्लोबिन कम, ऑक्सीजन लेवल गिरा हुआ और कई बीमारियों से ग्रसित होने के कारण वेंटीलेटर पर डिलीवरी की गई। इस दौरान ब्लड ट्रांसफ्यूजन के दौरान गलत ब्लड ग्रुप चढ़ाया गया,

जिसकी पुष्टि खुद अस्पताल प्रशासन की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट में हुई है। मंत्री खींवर ने स्पष्ट किया कि अस्पताल की ओर से पहले बनाई गई समिति की रिपोर्ट से संतुष्टि नहीं मिलने पर अब चिकित्सा शिक्षा विभाग के अतिरिक्त निदेशक मुकेश मीणा की अध्यक्षता में नई उच्च स्तरीय कमेट्री बनाई गई है। इस समिति में एसएमएस पूर्व अध्यक्ष डॉ. नरपत सिंह शेखावत, मेडिसिन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. सुधीर मेहता, एसएमएस अस्पताल के अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी, राजमेर की उप निदेशक डॉ. वंदना शर्मा शामिल है।

बैठक में चिकित्सा मंत्री ने सभी अधीक्षकों को निर्देशित किया कि आईसीयू, ऑपरेशन थिएटर और क्रिटिकल केयर वार्ड में केवल प्रशिक्षित व अनुभवी स्टाफ को ही इयूटी पर लगाया जाए। इसके अलावा चिकित्सकों, नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टाफ का नियमित प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जाए। इस आपात बैठक में चिकित्सा विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़, आयुक्त इकबाल खान, प्राचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी, अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी सहित चिकित्सा महकमे के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

पुलिस कमिश्नरेट में साइबर सपोर्ट सेंटर की शुरुआत



साइबर सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिये राजस्थान पुलिस महानिदेशक यू.आर.साहू और पुलिस महानिदेशक साइबर (अपराध) हेमंत प्रियदर्शी ने साइबर सपोर्ट सेंटर की शुरुआत की।

- ऑनलाइन खतरों की बढ़ती चुनौतियों को निटपने के लिए बनाया सेंटर
- साइबर अपराध से सबसे अधिक दो चार हो रहे हैं बच्चे

जयपुर। साइबर सुरक्षा को सुदृढ़ करने सहित ऑनलाइन खतरों की बढ़ती चुनौतियों को निटपने के लिए जयपुर पुलिस कमिश्नरेट कार्यालय में शनिवार से राजस्थान का पहला साइबर सपोर्ट सेंटर शुरू किया गया है। इस सेंटर में साइबर ठगी के शिकार हुए लोगों की मदद की जाएगी। वहीं साइबर अपराध से कई बार महिलाएं और बच्चे परेशान होकर अवसाद में चले जाते हैं। ऐसे में यह सेंटर इस तरह के पीड़ितों की काउंसलिंग करने में मदद करेगा। साथ ही ट्रामा से बाहर निकालने में मददगार साबित होगा।

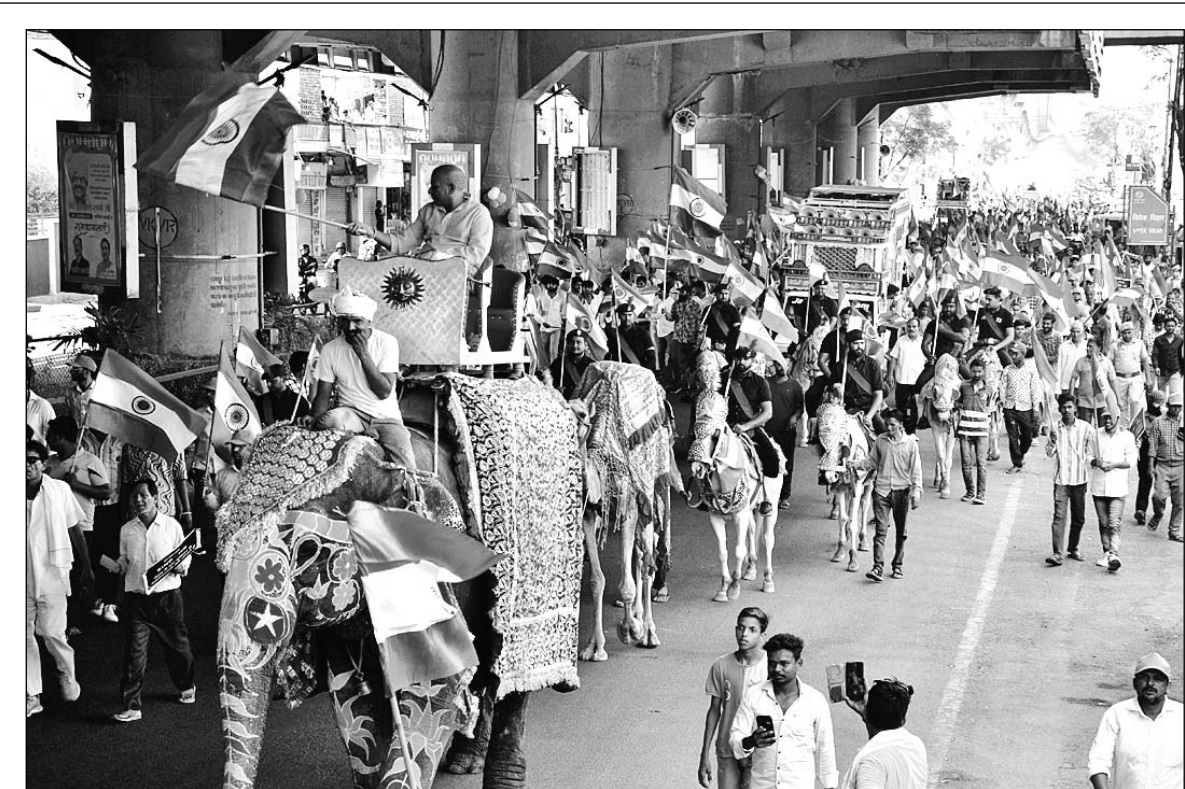
राजस्थान पुलिस महानिदेशक यू आर साहू, पुलिस महानिदेशक साइबर (अपराध) हेमंत प्रियदर्शी ने इस सेंटर की शुरुआत की है। यह सेंटर मुम्बई स्थित एनजीओ रेंसॉसिबल नेटिजन्स द्वारा संचालित किया जाएगा और कोगटा फाउंडेशन इसमें आर्थिक सहयोग करेगा। यह सेंटर ऑनलाइन ठगी के शिकार हुए लोगों को मुकाबला करने, साइबर अपराधों के पीड़ितों को तत्काल सहायता प्रदान करने और साइबर सेफ जयपुर अभियान के अंतर्गत साइबर वेल्नेस को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है।

साइबर क्राइम और उससे जुड़े आंकड़ों पर काम कर रही टीम ने बताया

कि साइबर स्पेस का उपयोग करने वाले तीन में से एक बच्चे को ऑनलाइन बुलिंग का सामना करना पड़ता है। 70 प्रतिशत बच्चों को साइबर खतरों का हर स्टेज पर सामना करना पड़ा है। साइबर अपराध के 30 प्रतिशत मामले महिलाओं को लक्षित करते हैं। एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार फाइनेंस साइबर अपराध के मामलों में 24.5 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। अकेले साइबर धोखाधड़ी के कारण 2024 में 2054 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ। राजस्थान में हर साल लगभग 3000 साइबर मामले दर्ज किए जा रहे हैं। इनमें से 47.25 प्रतिशत पैसों से जुड़ा अपराध है। 30.16 प्रतिशत यूपीआई, फोटाले से सम्बन्धित है। 12 प्रतिशत सोशल मीडिया से सम्बन्धित है। 11 प्रतिशत यौन उत्पीड़न से

सम्बन्धित है। साइबर अपराधों में लोगों ने पिछले तीन साल में 1581 करोड़ रुपए गवा दिए। समय पर हस्तक्षेप के कारण पुलिस 676 करोड़ रुपए होल्ड करा सकी है। साइबर हेल्पलाइन पर साइबर स्टॉकिंग, साइबर बुलिंग और अन्य प्रकार से परेशान किया जाता है। विशेष रूप से महिलाओं के शिकार होने के बारे में हर दिन लगभग 10/15 कॉल आते हैं।

साइबर बुलिंग, टोलिंग, साइबर स्टॉकिंग, रिवेंज पोर्न और ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी सहित ऑनलाइन संकट के पीड़ितों को मुफ्त मनोवैज्ञानिक, कानूनी और तकनीकी सहायता प्रदान करना। शिक्षा, प्रशिक्षण और जागरूकता अभियानों के माध्यम से साइबर अपराधों के जोखिम को कम करने के लिए उपाय अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना। इंटरनेट की लत, ऑनलाइन उत्पीड़न या साइबर अपराधों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए उपचार की सेवा प्रदान करना। एक सुरक्षित डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी एजेंसियों, कानून प्रवर्तन और कॉर्पोरेट क्षेत्र के साथ निरंतर जुड़ाव के माध्यम से साइबर कल्याण की वकालत करना।



जयपुर में हाथों में तिरंगा थामे हजारों लोग गुर्जर की थड़ी चौराहे से बैकुंठनाथ मंदिर सोडाला तक चिलचिलाती धूप में पैदल चले। प्रचंड गर्मी के बावजूद वे पूरी ताकत से भारत माता की जय, हिंदुस्तान जिंदाबाद, वंदे मातरम के जयघोष लगाते हुए न्यू सांगानेर रोड की गुंजायमान कर रहे थे। यात्रा का नेतृत्व परमवीर चक्र विजेता बिगेडियर होशियार सिंह दहिया और मेजर शैलान सिंह के परिवार ने किया। यात्रा में डीजे पर बजते देश भक्ति तराने युवाओं में जोश और उत्साह का संचार करते हुए थिरकने को मजबूर कर रहे थे। वहीं, भारत माता, जम्मू-कश्मीर में बफोली पहाड़ियों पर सीमा की रक्षार्थ तैनात वीर जवानों और तोप की झांकियों लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी रही।

राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं पर सख्त निगरानी, कोताही पर होगी सख्त कार्रवाई

जयपुर। राजस्थान सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को लेकर बड़ा फैसला लेते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने साफ कहा है कि सेवाओं में किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और जरूरतमंदों को समय पर जांच, दवा और उपचार मिलना सुनिश्चित किया जाएगा। प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने शनिवार को स्वास्थ्य भवन में आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंस में सभी जिलों के चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच राजधानी से गांव-ढाणी तक मजबूत होनी चाहिए। लू-तापघात की स्थिति को देखते हुए तैयारियों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के आदेश दिए गए हैं।

- प्रदेशभर में स्वास्थ्य सेवाओं को 'पेशेंट फ्रेंडली' बनाने के निर्देश, लू-तापघात प्रबंधन पर विशेष जोर
- सिलिकोसिस पीड़ितों को मिले तत्काल राहत, फर्जीवाड़े पर कड़ी कार्रवाई

राठौड़ ने निर्देश दिए कि जांच, दवा, उपचार, उपकरणों की उपलब्धता और क्रियाशीलता की नियमित मॉनिटरिंग की जाए। कोई भी मरीज जांच मशीनें खराब होने के कारण परेशान न हो, इसके लिए संस्थानों में समय पर मंटीनेंस कराया जाए। जांच मशीनें लंबे समय तक अक्रियाशील रहें तो संस्थान प्रभारी को जिम्मेदारी तय की जाएगी। स्टाफ की कमी होने पर सविदा पर भर्ती कर तत्काल व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

प्रमुख शासन सचिव ने निरामय राजस्थान को मिशन मोड में चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 30 वर्ष से अधिक आयु के हर नागरिक की एनसीडी स्क्रीनिंग का लक्ष्य समय पर पूरा किया जाए। साथ ही टीबी मुक्त भारत अभियान को और अधिक गति देने की जरूरत बताई गई। सिलिकोसिस पीड़ितों को योजनाओं का लाभ देने में संवेदनशीलता बरतने के निर्देश दिए

गए। लेकिन फर्जी दस्तावेज या जांच रिपोर्ट के जरिए लाभ उठाने वालों पर कड़ी कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई। राज्य के सभी चिकित्सा संस्थानों को फायर सेफ्टी ऑडिट तत्काल कराने, भवनों का समय-समय पर निरीक्षण करने और जरूरत पड़ने पर मरम्मत करवाने के निर्देश दिए गए हैं। खाद्य पदार्थों में मिलावट को लेकर जांच अभियान चलाने और स्टॉट फूड से लेकर बड़े खाद्य उत्पादकों तक की सख्त निगरानी का आदेश दिए गए हैं। दिव्यांगजन प्रमाण-पत्र के लंबित मामलों को तीन महीने में समाप्त करने की कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिए गए। कोई दिव्यांगजन प्रमाण के लिए चक्कर न काटे, यह सुनिश्चित करने को कहा गया।

जोधपुर विश्वविद्यालय में पेंशनर्स को छह माह से पेंशन नहीं

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय पेंशनर्स एसोसिएशन (रूपा) कार्यकारिणी की आज आपातकालीन बैठक विश्वविद्यालय अतिथि गृह में आयोजित की गई, इस बैठक में राज्य पोषित विश्वविद्यालयों, विशेष रूप से जय नारायण विश्वविद्यालय जोधपुर में पिछले 6 माह से विश्वविद्यालय कर्मियों को पेंशन जारी नहीं किए जाने जैसे विषय की गंभीरता से जुड़े विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा की गई, वह चर्चा के बाद कार्यकारिणी से जुड़े सदस्यों ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया, कि इस गंभीर विषय के संबंध में राज्य सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से एक विशाल अकूत 26 मई को राजस्थान विश्वविद्यालय कुलपति सचिवालय के समक्ष आयोजित किया जाएगा। धरने में राजस्थान विश्वविद्यालय से जुड़े सभी पेंशनर्स भाग लेंगे। पेंशनर्स एसोसिएशन ने विश्वविद्यालय से जुड़े कर्मियों व सभी पेंशनर्स से यह आग्रह किया है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस धरने में शामिल हो, जिससे इस स्थिति का भविष्य में किसी को भी सामना नहीं करना पड़े।

डबल स्टैंडर्ड की सरकार, जो पक्ष-विपक्ष के लिए चाहती है अलग कानून : डोटासरा

जयपुर। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कंवरलाल मीणा मामले में विधानसभा स्पीकर वासुदेव देवनानी और भजनलाल सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि कंवरलाल मीणा की सदस्यता रद्द करने में आखिर 24 दिन की देरी क्यों की गई? इस मामले में जानबूझकर कानून का उल्लंघन किया गया है।

इसी के साथ भाजपा विधायक कंवरलाल मीणा की सदस्यता होने के बाद अब अंता विधानसभा क्षेत्र में होने वाले उपचुनाव को लेकर डोटासरा ने कहा कि अंता उपचुनाव में कांग्रेस की जीत होगी। पिछली बार ही चार से पांच हजार वोटों का अंतर था। जिस व्यक्ति पर 27 मुकदमे दर्ज हों, वहां भाजपा ने बूथ के चर्चरिंग की। कुछ लोगों ने डर की वजह से वोट दे दिए थे, लेकिन अब वहां कांग्रेस की जीत होगी। प्रदेश मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से डोटासरा ने कहा कि राज्य सरकार और विधानसभा अध्यक्ष के फैसले से जनता में गलत संदेश गया है। ये कहते हैं कि हम डबल इंजन की सरकार हैं। यह डबल इंजन की नहीं, डबल स्टैंडर्ड की सरकार है जो अपने लिए अलग कानून चाहती है और विपक्ष के लिए अलग कानून चाहती है। जब राहुल गांधी की सदस्यता 24 घंटे के अंदर खत्म कर दी गई थी तो फिर भाजपा विधायक की सदस्यता रद्द करने में 24 दिन का समय क्यों लिया गया?

सतर्कता जरूरी, डर नहीं

विशेषज्ञों का कहना है कि अभी घबराने की नहीं, बल्कि सतर्क रहने की जरूरत है। लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। मास्क और सैनिटाइजर का फिर से उपयोग बढ़ाएं, भीड़भाड़ वाली जगहों में सावधानी बरतें।

ऐसे बड़े करोना के केस

मई में अब तक 10 नए करोना केस, जनवरी से अप्रैल तक केवल 2 केस, बीते 48 घंटे में 7 नए केस, 4 जोधपुर, 3 जयपुर के हैं।

इनका कहना है :

एसएमएस मेडिकल कॉलेज में चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवर ने बताया कि अभी तक किसी भी केस में घातक लक्षण सामने नहीं आए हैं। देशभर में पैनिंक जैसी कोई स्थिति नहीं है। पर हमने सभी अस्पतालों को निर्देश दे दिए हैं कि यदि कोई संदिग्ध मरीज आता है, तो उसकी तुरंत जांच की जाए।

- ओमिक्रॉन का सब-वैरियंट-1 सक्रिय, चिकित्सा विभाग अलर्ट मोड पर

संक्रमितों में तीन बच्चे शामिल हैं, जिनकी उम्र 5 महीने से 12 साल के बीच है। चौथा मरीज 38 वर्षीय युवक है। वहीं, जयपुर में तीन नए केस सामने आए हैं।

वैरियंट की पहचान जरूरी

चिकित्सा विभाग ने सभी नए संक्रमितों के सैंपल की जीनोम सीक्वेंसिंग शुरू कर दी है। विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने बताया कि नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल की हालिया बैठक में यह पुष्टि हुई है कि यह नया संक्रमण ओमिक्रॉन के सब-वैरियंट-1 से जुड़ा हो सकता है। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस वैरियंट से न तो अब तक किसी की मौत हुई है और न ही कोई गंभीर मामला रिपोर्ट हुआ है। मरीज साधारण दवाओं से ठीक हो सकते हैं।

अचानक बढ़े मामलों ने बढ़ाई चिंता

करोना के अचानक बढ़े मामलों ने चिंता बढ़ा दी है। वर्ष 2025 के पहले चार महीनों में पूरे राज्य में केवल दो करोना पॉजिटिव केस सामने आए थे। मगर मई की शुरुआत से ही मामलों बढ़ने लगे हैं। खासकर बीते दो दिनों में संक्रमितों की संख्या में तीव्र उछाल देखा गया है। जोधपुर एएस में पाए गए चार

रात्रि चौपाल में आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण हुआ



जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देश पर सांगानेर के अजयराजपुरा में शनिवार को रात्रि चौपाल का आयोजन किया गया।

काफी वर्षों से ग्रामीण लोग परेशान होते चले आ रहे थे। उक्त समस्याओं को मौके पर उपखण्ड अधिकारी हिमंत सिंह द्वारा सुना गया एवं 100 से अधिक धारा-136 के तहत शुद्ध प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण किया गया। ग्राम अजयराजपुरा से आये काश्तकार गोपाल पुत्र मोहरिया का

जमाबंदी में नाम गलत नाम जिसे गोपाल पुत्र मोहरू कर तुरंत राहत प्रदान की साथ ही ग्राम जगन्नाथपुर के काश्तकार का नाम जमाबंदी में नाम सूरज करण पुत्र नाथू से सूरजमल पुत्र नाथुराम किया गया। मौके पर उपस्थित लोगों में रात्रि चौपाल को लेकर काफी हर्ष की लहर थी। रात्रि चौपाल में उपखण्ड अधिकारी

हिमंत सिंह के साथ उप तहसीलदार बगरू, पटवारी, गिरदावर व अन्य पटवारीगण की टीम उपस्थित रही। उक्त रात्रि चौपाल कार्यक्रम में ग्रामीणों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण की श्रीमती विनीता सिंह (एडीएम प्रथम) द्वारा उपखण्ड अधिकारी व उनकी टीम की सराहना की।

सायबर ठगी में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जस्टिस अनूप कुमार ढंड को एकलपीठ ने यह आदेश कल्याण मोटर्स की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता भूपेन्द्र पारीक ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता वाहन बेचने और उनकी सर्विस करने वाली फर्म है। याचिकाकर्ता ने पिछले साल दो वाहनों की सर्विस की थी, जिसके बदले वाहन मालिक ने उसके खाते में 55,141 रुपए का भुगतान किया था। वहीं, गत जनवरी माह में बैंक ने पश्चिम बंगाल पुलिस की शिकायत पर उसके चालू खाते को यह कहते हुए फ्रीज कर दिया कि 55,141 रुपए की राशि साइबर ठगी से होते हुए पांचवें बैंक खाते से उसे मिली है। याचिका में कहा गया कि यह राशि उसे सर्विस के बदले अज्ञात व्यक्ति ने दी थी। उसे साइबर ठगी की कोई जानकारी भी नहीं है। वहीं, खाते में आई राशि को फ्रीज करने के बजाए पूरे बैंक खाते को ही फ्रीज करना गलत है। खाता फ्रीज करने के चलते वह अपने कर्मचारियों को वेतन सहित दैनिक खर्चों को नहीं कर पा रहा है और इससे उसका व्यापार पूरी तरह ठप हो गया है। ऐसे में बैंक प्रबंधन को निर्देश दिए जाएं कि वह उसका बैंक खाता डीफ्रीज करे। याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने याचिकाकर्ता का बैंक खाता डीफ्रीज करने के आदेश देते हुए, सिर्फ विवादित राशि ही फ्रीज करने को कहा है।

यू-ट्यूबर ज्योति की बांग्लादेश यात्रा पर जाँच एजेन्सियों की नजर

जांच का विषय है: किसके कहने से ज्योति बांग्लादेश गई तथा क्या वहाँ से भी दानिश के सम्पर्क में थी

■ **ज्योति ने ढाका यूनिवर्सिटी के वीडियो बनाये थे जहाँ के छात्रों ने शेख हसीना की सरकार का तख्ता पलटने में बढ़-चढ़ कर भाग लिया था।**

हिसार, 24 मई। यूट्यूबर ज्योति को बीते दिनों पुलिस ने पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया था। अब हरियाणा पुलिस और केंद्रीय जांच एजेंसियों ने ज्योति मल्होत्रा के बांग्लादेश दौरे को भी जांच के दायरे में ले लिया है। इन्वेस्टिगेशन एजेंसियों के सूत्रों के मुताबिक अब जांच एजेंसियां इस एंगल पर भी जांच कर रही है कि ज्योति किसके कहने पर बांग्लादेश गई थी। क्या ज्योति के बांग्लादेश दौरे पर जाने के पीछे भी पाकिस्तानी दूतावास के अधिकारी दानिश की साजिश है? जांच एजेंसियां इस बात की भी तस्दीक करने में जुटी हैं कि ज्योति जब बांग्लादेश गई, तब क्या वो पाकिस्तानी दूतावास के अधिकारी दानिश के संपर्क में थी? क्या ज्योति ने बांग्लादेश से दानिश से बात की थी?

ज्योति के बांग्लादेश दौरे की खास बात ये है कि उसने बांग्लादेश की जिस ढाका यूनिवर्सिटी के वीडियो बनाए थे, उसी ढाका यूनिवर्सिटी के छात्रों से अपने

वीडियो में ज्योति मल्होत्रा बात करते हुए भी नजर आ रही है। बता दें कि ज्योति साल 2024 के फरवरी महीने में बांग्लादेश गई थी और अगस्त 2024 में बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार का तख्ता पलट हो गया था। बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार का तख्ता पलटने में ढाका यूनिवर्सिटी के छात्रों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। दरअसल अब जांच एजेंसियां ज्योति से ये पता लगाने में जुटी हैं कि बांग्लादेश में हुए

तख्तापलट में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी की क्या भूमिका थी और यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को इस बारे में कुछ पता था ?

जस्टिस नागरत्ना सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम की सदस्य बनेंगी

नई दिल्ली, 24 मई। भारत की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश बनने की दौड़ में शामिल न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना का न्यायमूर्ति अभय एस ओका की सेवानिवृत्ति के बाद सुप्रीम कोर्ट के कोलीजियम का सदस्य बनना तय हो गया है।देश की पांचवीं सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश होने के नाते, न्यायमूर्ति नागरत्ना 25 मई को आधिकारिक रूप से कोलीजियम में शामिल हो जाएंगी।

राहुल गांधी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भारत ने जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी ठिकानों पर सटीक निशाने साधकर हमले किए। इसके बाद पाकिस्तानी सेना ने स्थिति को और उग्र बनाते हुए नागरिक इलाकों और सैन्य ठिकानों पर ड्रोन और मिसाइल हमले शुरू कर दिए। हालांकि भारतीय हवाई सुरक्षा प्रणालियों ने पाकिस्तानी हवाई हमलों को प्रभावी रूप से निष्क्रिय कर दिया, लेकिन पुंछ में पाकिस्तानी सैनिकों की सीमा पार से की गई गोलाबारी में कम से कम 13 निर्दोष नागरिक मारे गए और कई घर क्षतिग्रस्त हुए।

अपनी यात्रा के दौरान, राहुल गांधी ने उन परिवारों से मुलाकात की, जिन्होंने अपने प्रियजनों को इस गोलीबारी में खोया है।

उनके दौरे से पहले, कांग्रेस सांसद और जम्मू-कश्मीर मामलों के एआईसीसी महासचिव सैयद नसीर हुसैन ने कहा, “पाकिस्तान ने जिस तरह से नागरिकों पर हमला किया, उसमें 13 लोगों की मौत हुई और बहुत से लोग घायल हुए, काफी नुकसान हुआ है। इसी कारण राहुल गांधी आज यहां लोगों से मिलने आ रहे हैं। हम चाहते थे कि वे पहले ही आ जाते, लेकिन उन्हें अनुमति नहीं मिल रही थी।”

22 अप्रैल को पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले के बाद भी, राहुल गांधी मृतकों के परिजनों से मिले थे।

सवाई माधोपुर जिला परिवहन अधिकारी गिरफ्तार

जयपुर, 24 मई । एसीबी जयपुर ने 19 मई को सवाईमाधोपुर एसीबी प्रभारी सुरेन्द्र कुमार शर्मा एएसपी एवं दो दलालों को रिश्वत प्रकरण में गिरफ्तार किया गया था। इस प्रकरण में

नेतृत्व में कार्रवाई करते हुए जिला परिवहन अधिकारी सवाईमाधोपुर पुन्याराम मीणा को सीबीआई फाटक जगतपुरा से दस्तयाब किया गया। अनुसंधान में, आरोपी की संलिप्तता

■ **एंटी करप्शन ब्यूरो के ए.एस.पी. सुरेन्द्र शर्मा के मामले में जाँच पड़ताल के बाद जिला परिवहन अधिकारी पुन्या राम मीणा को गिरफ्तार किया गया।**

कार्यवाही करते हुये, जिला परिवहन अधिकारी सवाईमाधोपुर आरोपी पुन्याराम मीणा को जांच पडताल के पश्चात गिरफ्तार किया गया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो पुलिस महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहराडा ने बताया कि 19 मई को सवाईमाधोपुर एसीबी के पूर्व प्रभारी और एएसपी सुरेन्द्र कुमार शर्मा एवं दो दलालों को रिश्वत प्रकरण में गिरफ्तार किया गया था। जिसके अनुसरण में, परिवहन विभाग एवं अन्य विभागों के अधिकारी,कर्मचारियों की संलिप्तता की जांच की जा रही है।

जिस पर एसीबी के उपमहानिरीक्षक पुलिस राजेश सिंह के

के पुक्ता साक्ष्य पाये जाने पर उसे गिरफ्तार किया है। आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

गाँव को नगर पालिका की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुनवाई करते हुए दिए। याचिका में अधिवक्ता तमय ढंड ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार ने 24 मार्च, 2021 को एक अधिसूचना जारी कर तोड़िया का बास गांव को बानसूर नगर पालिका में शामिल किया था। वहीं, अब गत 27 मार्च को बिना कारण इस गांव को नगर पालिका की सीमा से बाहर कर दिया गया। याचिका में कहा गया कि किसी भी ग्राम को एक बार नगर पालिका की सीमा में शामिल करने के बाद उसे नगर पालिका की सीमा से अलग करने की शक्ति, नगर पालिका अधिनियम सहित, अन्य किसी कानून में नहीं है। ऐसे में तोड़िया का बास को बानसूर नगर पालिका से बाहर करने वाला राज्य सरकार का आदेश मनमाना और अवैध है। ऐसे में इस आदेश की क्रियान्विति पर रोक लगाकर उसे अवैध घोषित किया जाए।

थरूर विवाद पीछा नहीं...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाहिर करने की शर्त पर, स्वीकार किया कि थरूर की गतिविधियों ने बिहार विधानसभा चुनाव से पहले मोदी की छवि को चुनौती देने की कांग्रेस पार्टी की रणनीति को बाधित किया है, जबकि प्रधानमंत्री मोदी बिहार में “ऑपरेशन सिंदूर” को चुनावी अभियान के रूप में पेश करने जा रहे हैं। उन्होंने कहा, “जब भाजपा राहुल गांधी का मजाक उड़ा रही है कि वह पहलगाम जैसे गंभीर मुद्दों पर केन्द्र से सवाल कर रहे हैं, ऐसे समय में थरूर का सरकार से मेल खाना सीधे तौर पर भाजपा को ही लाभ पहुँचाता है।”

यह विवाद ऐसे संवेदनशील समय पर खड़ा हुआ है, जब मोदी सरकार “ऑपरेशन सिंदूर” को बिहार में अपने चुनावी समीकरण मजबूत करने के लिए आक्रामक तरीके से प्रमोट कर रही है। जबकि विपक्ष भाजपा के ऊपर राष्ट्रीय सुरक्षा और शासन से जुड़े गंभीर सवालों

से बचने का आरोप लगा रहा है।

थरूर ने अब तक इस आंतरिक आलोचना पर कूटनीतिक चुप्पी बनाए रखी है। हालांकि, उनके करीबी सूत्रों का कहना है कि वे इस मिशन में अपनी भूमिका को गैर-राजनीतिक और देशहित से प्रेरित मानते हैं।

पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का मानना है कि यह प्रकरण कांग्रेस के भीतर एक गहरे वैचारिक और पीढ़ीगत अंतर को दर्शाता है। कुछ लोग थरूर की वैश्विक सोच और प्रभाव को पार्टी की ताकत मानते हैं, वहीं, अन्य इसे पार्टी की पारंपरिक संरचना के लिए चुनौती मानते हैं।

कांग्रेस पार्टी इस समय आंतरिक असंतोष और आक्रामक भारतीय जनता पार्टी से जुड़ा रही है, ऐसे में देखना यह है कि वह किस तरीके से थरूर विवाद को सुलझाएगी, क्योंकि यह तरीका ही आगामी महीनों में पार्टी की एकता और उसकी सार्वजनिक छवि को काफी हद तक प्रभावित कर सकता है।

हार्वर्ड युनिवर्सिटी को अस्थायी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विश्वविद्यालय के पास मानव स्रोत सामग्री और नमूनों का एक अनमोल भंडार है, जिसे दशकों में संजोया गया है। यह भंडार कई बीमारियों और उनके इलाज पर क्रांतिकारी शोधों के लिए इस्तेमाल हुआ है।

इन नमूनों को लिक्विड नाइट्रोजन फ्रीजर्स में संरक्षित किया गया है और केवल इन्हें सुरक्षित रखने पर ही करोड़ों डॉलर खर्च होते हैं। अब अमेरिकी संघीय सरकार ने इन शोध परियोजनाओं की फंडिंग में कटौती की धमकी दी है, जिससे इन नमूनों को संरक्षित रखना कठिन हो जाएगा।

एक उदाहरण में, दशकों से हार्वर्ड के पब्लिक हेल्थ स्कूल में रक्त, मूत्र और डीएनए के नमूने एकत्र किए गए हैं। नर्सों और अन्य स्वयंसेवकों ने वर्षों तक अपने नमूने दिए हैं, और इस तरह का संग्रह दुनिया में और कहीं नहीं है।

अब इन सभी मानव नमूनों को खतरा है। एक अन्य परियोजना में, कैसर रोगियों से वर्षों तक ऐसे ही नमूने एकत्र किए गए हैं, जो दशकों और पीढ़ियों के दौरान शरीर की क्रियाविधियों की गहन जानकारी प्रदान करते हैं। इनसे रोगों के व्यवहार को समझने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

शोधकर्ता बताते हैं कि जहाँ पहले इन नमूनों से लाभ हुआ था, वहीं, अब नई तकनीकों, जैसे आर्टिफिशल इंटेलिजेंस और उज्जत डेटा विश्लेषण विधियों से इनकी उपयोगिता और बढ़ गई है।

हेल्थ और मैडिकल स्टडीज़ के अलावा, अमेरिकी विश्वविद्यालयों ने भौतिक विज्ञान, रसायन और अन्य विषयों में दीर्घकालिक अनुसंधान परियोजनाएं चलाई हैं।

रिपोर्टों के अनुसार, आधुनिक विज्ञान अब “बड़ी परियोजना” बन

चुका है, जिसे केवल कलम और कागज़ से नहीं चलाया जा सकता। बुनियादी शोध अब अत्यधिक महंगा हो चुका है और इसे चलाने के लिए अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं की आवश्यकता होती है। यदि संघीय सरकार द्वारा दी जाने वाली फंडिंग में कटौती की जाती है, तो इन शोध

परियोजनाओं को गंभीर नुकसान पहुँचेगा

संभावना है कि ये परियोजनाएं अब अन्य देशों और संस्थानों की ओर पलायन कर जाएँगीं। इससे अमेरिका की बुनियादी विज्ञान में गिरावट आना तय माना जा रहा है।

सेवारत कोटे से पीजी करने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आवंटित हुआ। इसमें याचिकाकर्ता दिसंबर 2023 से ही पोस्ट एमबीबीएस डिप्लोमा शिफ्ट रोग की ट्रेनिंग कर रहा है। इसकी सूचना उसने 2 जनवरी 2024 को ही कार्यकारी निदेशक, नेशनल बोर्ड ऑफ एजाम मेडिकल साइंस को दे दी थी, लेकिन 4 मार्च 2025 को उसे एक मैसेज मिला कि उसे वेबसाइट पर पीजी जॉइनिंग अपडेट करनी है। उसने उसी दिन अपनी ज्वाइनिंग को अपडेट करने की प्रक्रिया की, लेकिन प्रक्रिया पूरी नहीं हुई। कई बार प्रयास करने के बाद भी बिना किसी कारण उसका रजिस्ट्रेशन नहीं किया गया। इससे वह फाइनल एजाम का फॉर्म भरने से भी वंचित हो रहा है। याचिका पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपने हिस्से का पूर्ण जल प्राप्त हो सके। साथ ही, उन्होंने 51.5 किलोमीटर लंबी फिरोजपुर फीडर की लाइनिंग हेतु स्वीकृति शीघ्र प्रदान करने का भी आग्रह किया।

शर्मा ने आग्रह किया कि कालीसिंध और छबड़ा धर्मल परियोजनाओं में अतिरिक्त इकाइयों एवं 3200 मेगावाट की नई धर्मल इकाई की पिट हेड से 500 किलोमीटर से अधिक दूरी होने के कारण राज्य में स्थापना हेतु शिथिलन प्रदान की जाए। साथ ही, उन्होंने साउथ ईस्टर्न कोल फील्ड से दिए जा रहे 20 लाख मीट्रिक टन कोयले को नॉर्दन कोलफील्ड से उपलब्ध करवाने का भी अनुरोध किया।

मुख्यमंत्री ने राज्य में ऊर्जा सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि पीएम कुसुम योजना के कंपोनेंट-ए के तहत राज्य

को 5000 मेगावाट ऊर्जा उत्पादन तथा बैट्री स्टोरेज के लिए 5000 मेगावाट आवर का अतिरिक्त लक्ष्य आवंटित किया जाए। साथ ही, उन्होंने राजस्थान को आवंटित 115 गीगावाट बिजली उत्पादन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु 40 गीगावाट अतिरिक्त ऊर्जा के इवेक्युएशन हेतु प्लान तत्काल बनाने का अनुरोध किया।

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व से हमें गहरी प्रेरणा मिली है तथा राज्य स्तर पर हम राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी सभी पहलों को पूरा समर्थन देने के लिए और भी अधिक दृढ़ संकल्पित हुए हैं। शर्मा ने कहा कि दो दिन पहले 22 मई को प्रधानमंत्री के सीमावर्ती बीकानेर जिले में संबोधन के समय जनसाधारण में जो अद्भुत उत्साह एवं राष्ट्रभक्ति का जज्बा देखने को मिला, वैसा भावुक दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा। ये जनता का प्रधानमंत्री के प्रति अटूट विश्वास दर्शाता है।

MARUTI SUZUKI

ARENA

हमारी सबसे बड़ी खूबी है

मन की शांति

मारुति सुज़ुकी एरीना रेंज[#] में

6 एयरबैग्स स्टैंडर्ड हैं[#]

6 एयरबैग्स

स्टैंडर्ड के साथ

6 Airbags | ESP[®] | ABS with EBD | Hill Hold Control^{*} | Reverse Parking Sensors

3-Point ELR Seat Belts | Seat Belt Reminder | 3 Years or 100 000 km Warranty^{**}

विशेष ऑफर

WAGONR ₹68 100^{*} / ALTO K10 ₹68 100^{*} / BREZZA ₹42 000^{*}

SWIFT ₹53 100^{*} / CELERIO ₹68 100^{*} / EECO ₹43 100^{*}

SCAN TO CONNECT TO SHOWROOM NEAR YOU

E-BOOK TODAY AT WWW.MARUTISUZUKI.COM

Contact us at

1800-102-1800

T&C apply. Features and accessories shown may not be part of standard fitment. Black glass shade on the vehicle is due to lighting effect. Images used are for illustration purposes only. Car color may vary due to printing on paper. Offers may vary across variants. Maruti Suzuki India Limited reserves the right to discontinue offers without notice. *Offer includes consumer offer, exchange bonus and institutional or rural offer (wherever applicable) on select models/variants. Above mentioned savings amount is the value of maximum savings on select models. [#]Except Eriga & Spresso. ESP is the registered trademark of Mercedes-Benz Group AG. ^{**}3 years or 100 000 km whichever is earlier. Above offers are valid till 31st May 2025. ^{*}Hill hold control feature available in select variants and models only.

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : वलयाथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आर्यद मैन रोड आर्यद, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानरा। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालौर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोरा। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908